परिचय

संत जेवियर्स कॉलेज, सिमडेगा

तीसरा संस्करण

संत जेवियर्स कॉलेज, सिमडेगा वन महोत्सव, 2026

दिनाँक : 1 – 7 जुलाई

संत जेवियर्स कॉलेज
सिमडेगा

''लुसेन्स एट आर्डेन्स''

''आग और प्रकाश''

स्थापना – 2016

संपादक मंडल

मुख्य संपादक

सीमा खेस्स
सहायक प्राध्यापक

उप – संपादक

निशी तिर्की
सहायक प्राध्यापक

प्रतिमा परधिया
सहायक प्राध्यापक

शशि ज्योति बखला
सहायक प्राध्यापक

टंकक

सन्नी बसन्त किन्डो
शोटर (लाइब्रेरी)

"शिक्षा केवल ज्ञान नहीं, व्यक्तित्व से परिचय भी है।"

अपनी रचनाएँ, प्रोत्साहन और प्रतिक्रया भेजने के लिए निम्न पत्ते पर संपर्क करें :-
संत जेवियर्स कॉलेज, सिमडेगा, पोस्ट–खिजरी, थाना – ठेठईटांगर, जिला – सिमडेगा,
पिन–835235 (झारखण्ड)
संपर्क – 8210865183,7654227047

विषय सूची

1. संपादकीय : 101
2. संदेश
   - प्राचार्य : 102
   - उप–प्राचार्य : 103
   - उप–प्राचार्य सह ट्रेजर्र : 104
   - आईक्यूएसी समन्वयक : 105
   - अनुसंधान समन्वयक : 106
3. विद्यार्थी लेख : 107
   - योगः तन और मन का संतुलन : 108 – 109
   - बेरोजगारी : 110
   - योगः स्वास्थ्य जीवन की ओर : 111 – 112
   - मेरी प्रिय सहेली : 113
   - वार्षिक प्रशिक्षण शिविर : 114 – 116
   - दहेज प्रथा : 117 – 118
4. कहानियाँ : 119
   - रहस्यमयी जादुई डिब्बा : 120 – 122
   - लाल शर्ट : 123 – 124
   - अक्टूबर के वे दिन : 125 – 126
5. कविताएं : 127
   - इन हाथों को सलाम : 128 – 129
   - मेहनतकश हाथों को सलाम : 130
   - मेहनतकश हाथों को सलाम : 131
   - मेहनतकश हाथों को सलाम : 132
6. झारखण्ड के प्रमुख जलप्रपातो के नाम : 133
7. हिन्दी महीनों के नाम : 134
8. समसामयिक घटनाएं (करेंट अफेयर्स) : 135 – 136
9. पहेली : 137

संपादकीय

सीमा खेस्स
मुख्य संपादक

जीवन हमें प्रतिदिन कुछ नया सीखने का अवसर देता है। 'परिचय' का यह तीसरा अंक है। जून महीने के इस अंक में विविध विषय हैं– योग, बेरोजगारी, दहेज प्रथा, मेहनतकश लोग, ग्रीष्मावकाश की छुट्टियाँ इत्यादि। स्वस्थ जीवन के लिए योग को अपनाना आवश्यक है, क्योंकि योग शरीर को निरोग, मन को शांत और जीवन को संतुलित बनाता है। वहीं बेरोजगारी जैसी चुनौती का समाधान निराशा में नहीं, बल्कि शिक्षा, कौशल, आत्मविश्वास और निरंतर प्रयास में छिपा है। मेहनत और लगन से हर कठिनाई को अवसर में बदला जा सकता है।

समाज की प्रगति तभी संभव है जब हम दहेज प्रथा जैसी कुरीतियों का मिलकर विरोध करें। विवाह, प्रेम, विश्वास और सम्मान का बंधन है, न कि लेन–देन का सौदा। साथ ही हमें उन मेहनतकश लोगों के श्रम का सम्मान करना चाहिए, जिनके अथक परिश्रम से परिवार, समाज और देश का विकास संभव होता है।

गर्मी की छुट्टियाँ केवल मनोरंजन का समय नहीं, बल्कि व्यक्तित्व विकास का स्वर्णिम अवसर हैं। इन दिनों का उपयोग पुस्तकें पढ़ने, योग करने, नई कला सीखने, प्रकृति से जुड़ने तथा परिवार के साथ समय बिताने में करना चाहिए। यही आदतें भविष्य को उज्ज्वल बनाती हैं।

आइए, हम योग को जीवन का हिस्सा बनाएँ, कौशल से बेरोजगारी को हराएँ, दहेज प्रथा का विरोध करें, मजदूरों के श्रम का सम्मान करें, छुट्टियों का सदुपयोग करें और संतोष, अनुशासन तथा सकारात्मक सोच के साथ एक बेहतर समाज और उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में अपना योगदान दें।

संदेश

फादर डॉ. रोशन बाः
प्राचार्य

'विद्या विनयम् ददाति! अर्थात् विद्या विनय प्रदान करती है, विद्यार्थी का जीवन पवित्र होता है। वह हर पल में हार कर भी जीतता है। उदंडता व घमंड विद्यार्थी को कमजोर बनाता है और नम्रता विद्यार्थी को मजबूत बनाती है। ज्ञान विद्यार्थी का कमाई होती है, जिसे वह ईमादारी से जीवन के लिए कमाता है। विद्यार्थी जीवन अनुभव से सीखने का एक महत्वपूर्ण समय होता है। अतः विद्यार्थी जितना ज्यादा ज्ञान हासिल करने में स्वयं को समर्पित करता है, उतना ही ज्ञान की गहराईयों मे हीरे के समान मूल्यवान बनता है और आत्मर्निभर बनता है। विद्यार्थी जब अपने विद्यार्थी जीवन का सदुपयोग नहीं करता और उस व्यर्थ जीवन को खो देता है, तब वह एक भटकी हुई भेड़ के समान हो जाता है। वह सदैव दुसरों पर र्निभर रहता है। जीवन की परिस्थितियाँ विपरीत होने पर कई बार बना बनाया जीवन भी बिगड़ जाता है। जीवन ईश्वर का एक उपहार है, यदि समय रहते जीवन को सही दिशा मिलें, तो वह फलदार वृक्ष के समान बन जाता है, और मनुष्य का जीवन हर परिस्थिति में कृतज्ञतापूर्ण जीवन बनता है, लेकिन यदि विद्यार्थी समय का सम्मान न करे और उसका विद्यार्थी जीवन बिखर जाये तो शायद व्यक्ति अपने जीवन–यात्रा में अकेला ही छूट जाता है। विद्यार्थियों के जीवन में शिक्षकों व अभिभावकों का अभिन्न योगदान होता है, लेकिन यह तभी संभव है जब विद्यार्थियों में ज्ञान की भूख हो और वह अपने गुरू के करीब हो। वह अपने गुरू के निकट रह कर सीखने का प्रयास करें। एक शिक्षक की वास्तविक परीक्षा उसके विद्यार्थियों के व्यवाहरिक जीवन में सफलता और असफलता से होती है, शिक्षक को अपने विद्यार्थियों की सफलता पर गर्व होना चाहिए, क्योकि शिक्षक की वास्तविक कमाई उसके विद्यार्थियों का सफल जीवन होता है। एक सफल शिक्षक ज्ञानी होने के साथ–साथ व्यवहारिक, दूरदर्शी, परोपकारी, ईमानदार, उदार, शोधकर्त्ता, मिलनसार और धर्म निष्ठ होता है। वह सदैव अपने कर्म में जीवन–संतोष को प्रथम स्थान देता है। अतः ''परिचय'' का प्रयास है कि विद्यार्थी स्वयं को जाने और ज्ञान को अपने जीवन का हथियार बना ले। नम्रता के साथ जीवन जीयें तथा सभी का आदर करना सीखें।

संदेश

फा. डॉ. समीर जेवियर भौंरा
उप –प्राचार्य

प्रिय पाठकों,

संत जेवियर्स कॉलेज, सिमडेगा की यह कॉलेज पत्रिका कॉलेज के छात्रों के साहसी और शानदार प्रयासों में से एक है। यह बहुत उत्साहजनक है कि छात्र कुशल शिक्षकों के मार्गदर्शन में अपनी लेखनी और प्रकाशनों के माध्यम से खुद को अभिव्यक्त करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं।

लेखन के इतिहास पर थोड़ी सी रिसर्च से पता चलता है कि लेखन की शुरूआत लगभग 3200 BCE में मिट्टी (clay tablets) पर हुई थी। लगभग 3000 BCE में पैपिरस स्क्रॉल (papyrus scrolls) का अविष्कार हुआ; 200 BCE तक पार्चमेंट (parchment) और वेलम (vellum) आए; और 105 cE तक कागज का अविष्कार हुआ। 1990 के दशक में डिजिटल स्क्रीन (पर्सनल कंम्प्यूटर और वर्ड प्रोसेसर पर लिखना) और हमारे समय में 2007 तक टच स्क्रीन (स्मार्टफोन और टैबलेट) पर लिखने का आविष्कार हुआ। लिखने के उन्नत साधनों का विकास मानव सभ्यता में लेखन के महत्व को दर्शाता है।इसके महत्व के कारण, लेखन और प्रकाशन को मानव ज्ञान सभ्यता के ज्ञान को सुरक्षित रखने के लिए जरूरी साधनों में से एक माना गया है। लेखन और प्रकाशन कई उद्देश्यों के लिए किया जाता है, जैसे कि सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों को हल करना। आज दुनिया जिन मुद्दों से जूझ रही है, उनमें से एक जलवायु परिवर्तन है। धन के लालच ने सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक ढांचे को इस तरह से बनाया है कि सभी ढांचे प्राकृतिक संसाधनों के टिकाऊ इस्तेमाल के बजाय उनके शोषण की ओर ले जाते हैं। जलवायु परिवर्तन की कीमत अक्सर गरीब और हाशिए पर रहने वाले लोग चुकाते हैं। यह उन किसानों और खेती करने वालों के जीवन में साफ तौर पर देखा जा सकता है जो मानसून पर निर्भर हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण, बारिश नियमित और सही ढंग से नही होती है; और इसका नतीजा फसल की बर्बादी के रूप में सामने आता है। इसके अलावा, गांवो में रहने वाले लोग प्राकृतिक आपदाओं का सामना करते हैं, जैसे बिजली गिरने से मौत। हर कोई तापमान में बढ़ोतरी का अनुभव करता है। उभरते हुए लेखक के तौर पर, आप अपनी रचनाओं में ऐसे महत्वपूर्ण मुद्दों – चाहे वे सामाजिक, राजनीतिक या आर्थिक हों – को विषय के रूप में चुन सकते हैं। सभी मुद्दों पर लिखना जरूरी नहीं है। सबसे अच्छा यह है कि आप लेखन के अपने रूचि के क्षेत्र को चुने; और लेखन में अपना ज्ञान और कौशल विकसित करें। लगातार कड़ी मेहनत का फल आपको जरूर मिलेगा। अंत में मुझे बहुत खुशी है कि एडिटोरियल टीम इस अंक को लाने में सफल रही है। लेखकों, कवियों, एडिटोरियल बोर्ड और पाठकों को बधाई।

संदेश

फा. ब्रुनो टोप्पो
उप –प्राचार्य सह ट्रेजर्र

प्रिय पाठकों,

हमें भारतीय होने पर गर्व है। भारत की समृद्ध संस्कृति हमें दो अमूल्य जीवन–मूल्य प्रदान करती है–श्रम और योग। श्रम हमें मेहनत, समर्पण और आत्मनिर्भर बनाता है, जबकि योग हमें स्वस्थ, संतुलित एवं सकारात्मक जीवन प्रदान करता है। श्रम राष्ट्र के विकास में अह्म योगदान देता है तो दूसरी ओर योग हमें तन–मन और आत्मा को एकग्र, स्वस्थ एवं सशक्त बनाता एवं समाज को नई ऊर्जा प्रदान करता है। आज अवश्यकता है कि हम श्रम की गरिमा का सम्मान करें, प्रत्येक कर्म को ईमानदानी और निष्ठा से निभाएँ तथा योग को अपने दैनिक जीवन–शैली का अभिन्न अंग बनाएँ। जब परिश्रम और आत्मसंयम एक साथ चलते हैं, तभी सशक्त एवं समृद्ध राष्ट्र का निर्माण होता है। श्रम की गरिमा को सदैव सर्वोच्च स्थान देकर, छोटे–छोटे कार्यो को भी हमें पूर्ण निष्ठा और समर्पण से करना चाहिए। जीवन की वास्तविक सफलता केवल ज्ञान अर्जित करने में नहीं, बल्कि उसे श्रेष्ठ संस्कारों, अनुशासित जीवन शैली और कर्मनिष्ठ आचरण के साथ आत्मसात करने में निहित हैं।

समय के साथ संसार में निरंतर बदलाव हो रहे हैं, और ये परिवर्त्तन मानव जीवन को नई दिशा दे रहे हैं। हर महान् परिवर्त्तन की शुरूवात एक छोटी विचार से होती है। प्रिय पाठकों, एक अच्छी रचना भी समाज मे सकारात्मक परिवर्त्तन का माध्यम बन सकती है और समाज के लिए ज्ञान और प्रेरणा की मूल्य धरोहर बन जाती है। सोच ही परिवर्त्तन की शुरूआत की पहली सीढ़ी है। अपनी लेखनी के माध्यम से हम अपने विचारों को जनमानस तक पहुँचाकर परिवर्त्तन के बीज बो सकते हैं। नियमिल लेखन से भाषा पर अधिकार बढ़ता है, आत्मविश्वास विकसित होता है और अभिव्यक्ति भी प्रभावशाली बनती है।

आइए हम सब मिलकर ऐसे समाज क निर्माण के लिए अच्छी सोच के साथ संकल्प लें जहाँ श्रम का सम्मान हो, स्वास्थ्य को प्राथमिकता मिले और शिक्षा मानवीय मूल्यों से अनुप्राणित हो। अच्छी सोच हमारे राष्ट्र की वास्तविक शक्ति और उज्जवल भविष्य का आधार है। आप सभी के उज्जवल स्वस्थ्य एवं सफल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

संदेश

रेनी अलमा लकड़ा
सहायक प्राध्यापक
आईक्यूएसी समन्वयक

संत जेवियर्स कॉलेज, सिमडेगा की त्रैमासिक पत्रिका "परिचय" के इस नवीन अंक के लिए अपना संदेश प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। एक महाविद्यालयीन पत्रिका केवल लेखों का संकलन नहीं होती, बल्कि यह किसी शैक्षणिक संस्थान के बौद्धिक, सृजनात्मक एवं सांस्कृतिक जीवन का सजीव प्रतिबिंब भी होती है। यह विद्यार्थियों और शिक्षकों को अपने विचारों की अभिव्यक्ति, प्रतिभाओं के विकास तथा उपलब्धियों को साझा करने का एक सशक्त मंच प्रदान करती है।

आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC) का उद्देश्य संस्थान में गुणवत्ता, नवाचार तथा निरंतर सुधार की संस्कृति को विकसित करना है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केवल कक्षा–कक्षों और परीक्षाओं तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह विद्यार्थियों की आलोचनात्मक सोच, प्रभावी अभिव्यक्ति, विविधताओं के प्रति सम्मान तथा समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना में भी परिलक्षित होती है। इस दृष्टि से परिचय विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को अपने विचार, अनुभव, शोध तथा रचनात्मक अभिव्यक्तियों को साझा करने का अवसर प्रदान कर संस्थान की शैक्षणिक गुणवत्ता को सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

मुझे यह देखकर प्रसन्नता होती है कि इस अंक में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक अपनी सहभागिता सुनिश्चित की है। उनकी रचनाएँ जिज्ञासा, कल्पनाशीलता, सामाजिक संवेदनशीलता तथा उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता का परिचय देती है। ऐसे प्रयास हमारे शैक्षणिक वातावरण को समृद्ध बनाते हैं और विद्यार्थियों को आत्मविश्वासी, उत्तरदायी तथा संवेदनशील नागरिक बनने की प्रेरणा देते हैं।

जेसुइट शिक्षा की भावना के अनुरूप, आइए हम सभी सत्य, न्याय, ईमानदारी और सेवा जैसे मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को और सुदृढ़ करें। मेरी कामना है कि 'परिचय' का यह अंक प्रत्येक पाठक को ज्ञान, सृजनशीलता और आजीवन सीखने की प्रेरणा प्रदान करे।

मैं संपादकीय मंडल, मार्गदर्शक शिक्षकों, सभी छात्र–छात्राओं तथा इस अंक के प्रकाशन में सहयोग देने वाले प्रत्येक व्यक्ति के प्रति अपनी हार्दिक सराहना व्यक्त करती हूँ। मैं संपूर्ण संपादकीय टीम को इस उत्कृष्ट प्रयास के लिए बधाई देती हूँ तथा परिचय की निरंतर प्रगति एवं सफलता की मंगलकामना करती हूँ।

संदेश

डॉ. अनिमेष रॉय
सहायक प्राध्यापक

सेंट जेवियर्स कॉलेज, सिमडेगा, झारखंड के इस शैक्षणिक परिवेश में जब हम मानवीय पुरुषार्थ और आत्म–अन्वेषण के मूल्यों पर विचार करते हैं, तो हमें 'अंतरराष्ट्रीय श्रम दिवस' तथा 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' के अंतर्निहित दर्शन में एक गहरा वैचारिक समन्वय दिखाई देता है। समाज की प्रगति अंततः श्रमिक के अनवरत पुरुषार्थ और निष्काम कर्म की गरिमा पर ही टिकी है। किंतु, समष्टि के भविष्य को गढ़ने के लिए जिस शारीरिक सामर्थ्य की आवश्यकता होती है, उसे आंतरिक स्थिरता और आत्मिक संबल से ही संतुलित किया जा सकता है। योग की पद्धति के माध्यम से हमारे शोधार्थियों और विद्यार्थियों को मन, काया, और चेतना के उस सात्विक संतुलन को साधना चाहिए, जो आधुनिक जीवन की आपाधापी के बीच आंतरिक संप्रभुता की रक्षा करता है। बाह्य यथार्थ को निर्मित करने वाले कर्मठ हाथों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने और आंतरिक जीवन को सुदृढ़ करने वाली ध्यान–साधना को अंगीकार करके ही हम एक विवेकशील, न्यायसंगत, और सुदृढ़ समाज की नींव रख सकते हैं।

विद्यार्थी लेख

योगः तन और मन का संतुलन

जेन रोजलिन बारला
अर्थशास्त्र विभाग (बी. ए. सेम– vii)
सत्रः 2022–26

योग का अर्थ

'योग' का शाब्दिक अर्थ है 'जोड़ना' या 'मिलान करना'। योग शब्द के इस अर्थ का भारतीय संस्कृति में बहुत अधिक प्रयोग किया है जैसे – गणित में दो या दो से अधिक संख्याओं के जोड़ को योग कहते हैं, चिकित्सा शास्त्र में विभिन्न औषधियों के मिश्रण को योग कहते हैं, ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों के विभिन्न स्थितियों को योग कहते हैं। योग शब्द का विभिन्न अर्थों में प्रयोग किया गया है किंतु हम आध्यात्मिकता के क्षेत्र में इस शब्द के अर्थ पर विचार करते हैं तो वहाँ उसका अर्थ "अपने आप से मुक्त होना" अर्थात "अपने स्वरूप में स्थिर हो जाना" या "जीवात्मा का परमात्मा के मिलन को योग कहा जाता है।"

योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के यूजीस/ युज धातु से हुआ है जिसका अर्थ है सम्मिलित होना या एक होना। इस एकीकरण का अर्थ जीवात्मा तथा परमात्मा का एकीकरण अथवा मनुष्य के व्यक्तित्व के शारीरिक मानसिक बौद्धिक तथा आध्यात्मिक पक्षों के एकीकरण से लिया जा सकता है। सामान्य रूप से योग का अर्थ मन की स्थिरता से है अर्थात मानसिक स्थिरता करना है।

परिभाषाः

विष्णु पुराण के अनुसार "जीवात्मा तथा परमात्मा का पूर्णतया मिलन ही योग है।"

पतंजलि योगसूत्र के अनुसार, "अभ्यास व वैराग्य द्वारा चित्तवृत्तियों के बाह्य समस्त विषयों से निरुद्ध कर असंप्रेज्ञता व समाधि की स्थिति में अवस्थित होना योग है।"

भारत ऋषियों, मुनियों और ज्ञान की भूमि रही है और इसी भूमि पर उत्पन्न हुई विद्या है' योग',जो आज विश्व भर में भारत की पहचान बन चुकी है। संयुक्त राष्ट्र ने 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग

दिवस घोषित कर भारत के इस प्राचीन ज्ञान को सम्मान दिया है। यह भारत की अमूल्य धरोहर है।

तन का स्वास्थ्य:

योग कर्मों में कुशलता लाता है, योग हमारे शरीर को स्वस्थ और सशक्त बनाता है। आज के तनावपूर्ण और भागदौड़ भरे जीवन में योग का महत्व और भी बढ़ गया है। नियमित योगाभ्यास से शरीर में लचीलापन आता है, रक्त संचार सुधरता है तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। योग व्यक्ति को शारीरिक रूप से सक्रिय और ऊर्जावान बनाता है। योग के अनेक प्रकार हैं – प्राणायाम, ध्यान और आसन। आसन शरीर को लचीला, मजबूत और निरोगी बनाते हैं। सूर्य नमस्कार पूरे शरीर को सक्रिय करता है, प्राणायाम फेफड़ों को शक्ति देता है और ध्यान तंत्रिका तंत्र को शांत करता है। जब शरीर स्वस्थ होता है, तो व्यक्ति का मन भी प्रसन्न रहता है।

मन का संतुलन :

मन की चंचलता ही दुःख का कारण है। आधुनिक भागदौड़ भरी जिंदगी में जहाँ लोग भौतिक सुख सुविधाओं के पीछे भागते हुए मानसिक तनाव से गिर चुके हैं। ऐसी स्थिति में योग केवल एक व्यायाम ही नहीं, बल्कि जीवन को संतुलित करने की एक संपूर्ण पद्धति बनकर सामने आया है। ध्यान और श्वास की साधना मन को भटकने से रोकती है, ध्यान मन को वर्तमान में वापस लाता है जिससे मन शांत होता है, क्रोध कम होता है, निर्णय स्पष्ट होते हैं और भीतर एक अलग तरह का सुकून पैदा होता है। ध्यान से मानसिक संतुलन होता है जिससे हम अपनी भावनाओं और विचारों पर नियंत्रण कर पाते हैं। जब मन शांत रहता है, तो तन और मन दोनों पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है।

योग सिखाता है कि बाहर की दुनिया को बदलने से पहले भीतर संतुलन जरूरी है। योग केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है। यह 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना सिखाता है। जब व्यक्ति भीतर से संतुलित होता है तो उसका व्यवहार परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति समर्पित हो जाता है। यही संतुलन समाज को सशक्त और राष्ट्र को मजबूत बनाने में मदद करता है। तन और मन का संतुलन ही वह भूमि है जहाँ ज्ञान, करुणा और विवेक अंकुरित होते हैं।

"योग केवल एक व्यायाम ही नहीं, बल्कि यह जीवन जीने की एक कला है।

****

बेरोजगारी

आकांक्षा सोरेंग
हिंदी विभाग(बी. ए. सेम–iii)
सत्र: 2023– 2027

बेरोजगारी आज भारत ही नहीं, बल्कि विश्व की एक गंभीर सामाजिक और आर्थिक समस्या है। जब कोई व्यक्ति काम करने की इच्छा और क्षमता रखने के बावजूद रोजगार प्राप्त नहीं कर पाता, तो उसकी स्थिति को बेरोजगारी कहा जाता है। यह समस्या व्यक्ति, परिवार तथा पूरे समाज के विकास में बाधा उत्पन्न करती है।

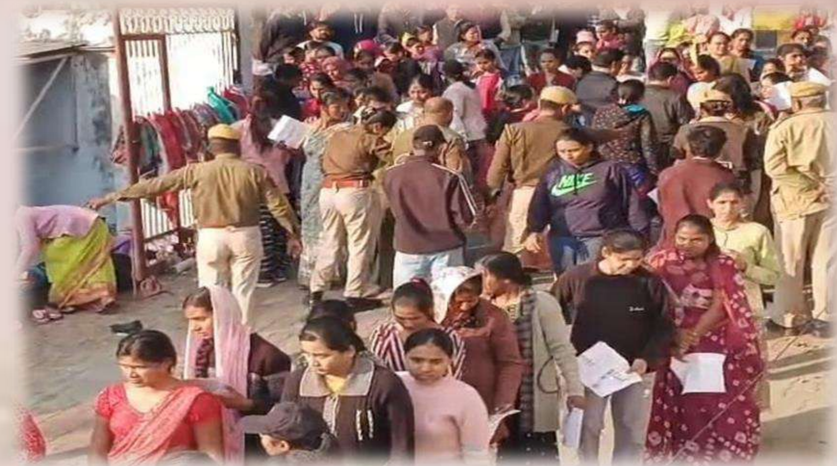

भारत में बेरोजगारी के कई कारण हैं। सबसे प्रमुख कारण जनसंख्या वृद्धि है। जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है, जबकि रोजगार के अवसर उसी अनुपात में नहीं बढ़ पा रहे हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षा व्यवस्था में व्यावहारिक और तकनीकी ज्ञान की कमी, उद्योगों का धीमा विकास, कृषि पर अत्यधिक निर्भरता तथा कौशल प्रशिक्षण की कमी भी बेरोजगारी को बढ़ावा देती है। कई बार शिक्षित युवाओं को उनकी योग्यता के अनुसार रोजगार नहीं मिल पाता, जिससे शिक्षित बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न होती है।

बेरोजगारी के अनेक दुष्परिणाम हैं। बेरोजगार व्यक्ति आर्थिक तंगी का सामना करता है, जिससे उसके परिवार का जीवन प्रभावित होता है। लगातार बेरोजगार रहने से व्यक्ति में निराशा, तनाव और आत्मविश्वास की कमी आ सकती है। कई बार यह स्थिति अपराध, नशाखोरी और सामाजिक असंतोष को भी जन्म देती है। देश की उत्पादन क्षमता और आर्थिक विकास पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

बेरोजगारी की समस्या के समाधान के लिए सरकार और समाज दोनों को मिलकर प्रयास करने चाहिए। तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि युवा रोजगार योग्य बन सकें। लघु एवं कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन देकर अधिक रोजगार के अवसर सृजित किए जा सकते हैं। स्वरोजगार योजनाओं, स्टार्टअप्स तथा कौशल विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा देना भी आवश्यक है। साथ ही, जनसंख्या नियंत्रण और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों का विकास भी इस समस्या को कम करने में सहायक हो सकता है।

अंततः कहा जा सकता है कि बेरोजगारी एक गंभीर चुनौती है, जिसका समाधान समय की आवश्यकता है। यदि सरकार, निजी क्षेत्र और नागरिक मिलकर प्रयास करें, तो रोजगार के अधिक अवसर उत्पन्न किए जा सकते हैं और देश को आर्थिक तथा सामाजिक रूप से सशक्त बनाया जा सकता है। बेरोजगारी मुक्त समाज ही समृद्ध और विकसित राष्ट्र की पहचान होता है।

****

योग: स्वस्थ जीवन की ओर एक प्रेरणादायी कदम

संत जेवियर कॉलेज, सिमडेगा में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया 12वाँ अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

"योग केवल शरीर को स्वस्थ रखने का अभ्यास नहीं, बल्कि मन, बुद्धि और आत्मा के मध्य सामंजस्य स्थापित करने की एक जीवन–पद्धति है।"

भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर योग आज विश्वभर में स्वास्थ्य, शांति और संतुलित जीवन का पर्याय बन चुका है। इसी भावना को आत्मसात करते हुए संत जेवियर्स कॉलेज, सिमडेगा के स्थायी परिसर धवईपानी में महाविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC) के तत्वावधान में राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) एवं राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के संयुक्त सहयोग से 12वाँ अंतरराष्ट्रीय योग दिवस अत्यंत गरिमापूर्ण, अनुशासित एवं उत्साहपूर्ण वातावरण में मनाया गया। इस आयोजन का उद्देश्य विद्यार्थियों में योग के प्रति जागरूकता विकसित करना, स्वस्थ जीवनशैली को प्रोत्साहित करना तथा शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक संतुलन के महत्व को रेखांकित करना था।

कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय के प्राचार्य फादर डॉ. रोशन बा द्वारा किया गया। इस अवसर पर फादर ब्रुनो, फादर डॉ. समीर जेवियर भौंरा, एनसीसी के एएनओ रोशन किशोर गिध, एनएसएस कार्यक्रम समन्वयक डॉ. निशा रानी धनवार, महाविद्यालय के शिक्षकगण, शिक्षकेत्तर कर्मचारी, एनसीसी कैडेट्स, एनएसएस स्वयंसेवक तथा बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे। योग दिवस का आयोजन पूरे परिसर में उत्साह, अनुशासन और सकारात्मक ऊर्जा का वातावरण निर्मित कर रहा था।

अपने प्रेरक उद्बोधन में प्राचार्य फादर डॉ. रोशन बा ने कहा कि योग भारत की हजारों वर्षों पुरानी ज्ञान–परंपरा का अमूल्य उपहार है, जिसने संपूर्ण विश्व को स्वस्थ एवं संतुलित जीवन जीने की दिशा प्रदान की है। उन्होंने कहा कि योग व्यक्ति के शरीर को सुदृढ़, मन को शांत, विचारों को सकारात्मक तथा व्यक्तित्व को अनुशासित बनाता है। वर्तमान समय में, जब युवा वर्ग अनेक प्रकार के मानसिक दबाव, तनाव और प्रतिस्पर्धा का सामना कर रहा है, तब योग उनके लिए आत्मविश्वास, धैर्य और एकाग्रता का सर्वोत्तम साधन है। उन्होंने विद्यार्थियों से प्रतिदिन योगाभ्यास को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाने का आग्रह किया।

एनसीसी के एएनओ रोशन किशोर गिध ने "स्वस्थ वृद्धावस्था हेतु योग" विषय पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि योग जीवन के प्रत्येक चरण में समान रूप से उपयोगी है। नियमित योगाभ्यास शरीर को रोगों से बचाने, प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने, मानसिक तनाव कम करने तथा दीर्घायु एवं सक्रिय जीवन जीने में सहायक सिद्ध होता है। उन्होंने कहा कि योग अनुशासन, आत्मसंयम और आत्मविश्वास का भी सशक्त माध्यम है, जो विशेष रूप से एनसीसी कैडेट्स के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

एनएसएस कार्यक्रम समन्वयक डॉ. निशा रानी धनवार ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज का युग तीव्र गति, बढ़ती प्रतिस्पर्धा और अनियमित जीवनशैली का युग है। ऐसे समय में योग व्यक्ति को मानसिक शांति, भावनात्मक संतुलन तथा सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि योग केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह परिवार, समाज और राष्ट्र को स्वस्थ एवं सशक्त बनाने का भी आधार है। उन्होंने विद्यार्थियों एवं स्वयंसेवकों से आह्वान किया कि वे योग को केवल एक दिवस का कार्यक्रम न मानकर जीवन का नियमित अभ्यास बनाएँ तथा समाज में भी इसके प्रति जागरूकता फैलाएँ।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण सामूहिक योगाभ्यास रहा। कैडेट अनुप डुंगडुंग, नीलम कुमारी, कुलदीप एवं जॉर्डन के कुशल नेतृत्व में सभी प्रतिभागियों ने सूर्य नमस्कार, ताड़ासन, वृक्षासन, भुजंगासन, वज्रासन, प्राणायाम, अनुलोम–विलोम, भ्रामरी तथा ध्यान सहित अनेक योगाभ्यास किए। योगाभ्यास के दौरान पूरे परिसर में अनुशासन, एकाग्रता एवं सामूहिक सहभा| गिता का प्रेरणादायी दृश्य देखने को मिला। प्रशिक्षकों ने प्रत्येक योगासन के स्वास्थ्य लाभों की जानकारी देते हुए नियमित अभ्यास के महत्व को भी सरल एवं प्रभावी ढंग से समझाया।

कार्यक्रम के समापन पर सभी उपस्थित शिक्षकगण, कर्मचारी, एनसीसी कैडेट्स, एनएसएस

स्वयंसेवकों एवं विद्यार्थियों ने प्रतिदिन योगाभ्यास करने, स्वस्थ एवं अनुशासित जीवनशैली अपनाने तथा योग के संदेश को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाने का सामूहिक संकल्प लिया।

यह आयोजन केवल अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का औपचारिक उत्सव नहीं था, बल्कि भारतीय संस्कृति, स्वास्थ्य चेतना और मानवीय मूल्यों के प्रति महाविद्यालय की प्रतिबद्धता का सशक्त उदाहरण भी था। संत जेवियर्स कॉलेज, सिमडेगा का यह आयोजन विद्यार्थियों के जीवन में स्वास्थ्य, अनुशासन, आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच के बीज बोने वाला एक अविस्मरणीय अवसर सिद्ध हुआ। योग का यह संदेश सभी के लिए प्रेरणास्रोत है कि "स्वस्थ शरीर, शांत मन और जागृत चेतना ही समृद्ध जीवन की वास्तविक पहचान है।"

****

मेरी प्रिय सहेली

मनीला कण्डुलना
हिन्दी विभाग (बी. ए. सेम–iii)
सत्र: 2023– 2027

हर व्यक्ति के जीवन में एक ऐसा मित्र अवश्य होता है जो हर सुख–दुःख में साथ होता है। मित्रता को जीवन का एक अनमोल उपहार भी कहा गया है। एक व्यक्ति के जीवन को सफल बनाने में मित्र का बहुत बड़ा योगदान होता है।

मेरे जीवन में भी एक ऐसी ही सहेली है, जिसका नाम आकांक्षा है। वह बहुत सुंदर और सुशील लड़की है, इसलिए वह मुझे अच्छी लगती है। उसका स्वभाव मनमोहने वाला है इसी कारण सभी लोग उसे पसंद करते हैं। वह सुंदर होने के साथ–साथ दिल की भी बहुत अच्छी है। वह एक हंसमुख लड़की है जो हमेशा हँसती मुस्कुराती रहती है। हम साथ–साथ पढ़ाई करते हैं वह पढ़ाई में भी अच्छी है। वह हर वक्त मेरे साथ रहती है और हर कार्य में मेरी मदद करती है। ऐसी सहेली को पाकर मैं बहुत खुश हूँ।

हम दोनों एक दूसरे को बचपन से जानते हैं और साथ हैं। हमारी मित्रता बहुत अच्छी और पक्की है। मैं भगवान से यही दुआ करती हूँ कि हम हमेशा ऐसे ही खुश और साथ रहे। वैसे तो हमारी मित्रता बचपन से है लेकिन गहरी मित्रता कॉलेज में आकर हुई। हम दोनों सारे काम साथ में करते हैं, जैसे पुस्तकालय जाना, बाजार जाना इत्यादि। हम दोनों पढ़ाई में भी एक दूसरे की मदद करते हैं। जब मैं बहुत ज्यादा परेशान रहती हूँ तब वह मुझे संभालती है, साथ ही साथ वहां मेरा मनोबल भी बढ़ाती है। इसी करण में पढ़ाई अच्छे से कर पाती हूँ। उसके होने से मुझे किसी भी चीज की चिंता नहीं होती। वह मुझे हमेशा अपने सपनों को लेकर सतर्क करती है। जब भी मैं अपना सपना भूल जाती हूँ और रास्ता भटक जाती हूँ तब वहां मुझे बहुत अच्छी तरह से सही – गलत का फर्क समझाती है।

हर किसी को ऐसा मित्र नहीं मिलता है। मैं बहुत खुशनसीब हूँ कि मुझे ऐसी सहेली मिली है। जीवन में एक अच्छा मित्र का होना बहुत जरूरी है क्योंकि वही हमेशा सुख–दुख में साथ होता है। सच्चा मित्र मिलना आज के समय में बहुत मुश्किल है। जब घर वाले साथ नहीं देते हैं तब यही मित्र साथ में खड़े होते है इसलिए हमें अपना एक खास मित्र बनाना ही चाहिए। कई विद्वानों ने भी कहा है कि सच्चा मित्र अगर मिल जाए तो जीवन अवश्य ही सफल हो जाता है। मित्र हमेशा सुंदरता को ही देखकर नहीं बनानी चाहिए बल्कि व्यवहार, उसकी अच्छाई, दया–करुणा जैसे गुणों को देखकर बनानी चाहिए। मन–दिल साफ होना चाहिए। सुंदरता तो केवल बाहरी दिखावा होता है। मेरे जीवन में भी बहुत सारे मित्र आए और चले भी गए, पर उन सब में आकांक्षा ही अभी तक मेरे साथ है। आकांक्षा जैसी सहेली पाकर मैं बहुत खुश हूँ।

अतः सच्चा मित्र का मिलन जीवन का एक अनमोल उपहार है इस उपहार को हमेशा संजोकर रखनी चाहिए।

वार्षिक प्रशिक्षण शिविर (ATC),2026 में मेरा अनुभव

(1 जून – 10 जून, 2026)

कैडेट – नीलम कुमारी
रजिस्ट्रेशन संख्या – JH2025SWIA1211369

बी. एन. जालान कॉलेज, सिसई में आयोजित 10 दिवसीय वार्षिक प्रशिक्षण शिविर (ATC) में भाग लेना मेरे एनसीसी जीवन के सबसे यादगार अनुभवों में से एक रहा। मैं इस शिविर में बहुत उत्साह और जिज्ञासा के साथ पहुँची थी। मुझे नहीं पता था कि ये दस दिन मुझे अनुशासन, नेतृत्व, टीम भावना और आत्मविश्वास जैसे महत्वपूर्ण गुण सिखाएँगे।

हमारी दिनचर्या पूरी तरह अनुशासित और सुव्यवस्थित थी। सुबह जल्दी उठकर शारीरिक प्रशिक्षण (PT) होता था, उसके बाद नाश्ता किया जाता था। पूरे दिन में थ्योरी कक्षाएँ, ड्रिल अभ्यास,

दोपहर का भोजन, खेल–कूद, रोल कॉल और रात में विश्राम शामिल था।

मैं अपने कॉलेज की वरिष्ठ कैडेटों में से एक थी, इसलिए मुझे प्रतिदिन रात 9:00 बजे सभी कैडेटों के मोबाइल फोन एकत्र करने की जिम्मेदारी दी गई थी। यह जिम्मेदारी छोटी जरूर थी, लेकिन इससे मुझे उत्तरदायित्व निभाने और नेतृत्व करने का अच्छा अनुभव मिला। हमारे कमरे में जूनियर विंग (JW) की कैडेट भी हमारे साथ रहती थीं, जिससे हमें उनसे परिचय बढ़ाने और अच्छी मित्रता बनाने का अवसर मिला।

शिविर का सबसे विशेष अनुभव हथियार प्रशिक्षण था। हमें .22 डीलक्स राइफल से फायरिंग करने और गन परेड का अभ्यास करने का अवसर मिला। शुरुआत में 4 किलोग्राम की परेड राइफल उठाना कठिन लगा, जबकि .22 राइफल अपेक्षाकृत हल्की थी। 4 जून को नाश्ते के समय अचानक हमें बताया गया कि फायरिंग अभ्यास के लिए जाना है। तेज धूप और गर्मी के कारण निशाना लगाना आसान नहीं था। लेकिन सूबेदार राजपूत श्याम सुंदर और सूबेदार सोमरजीत सिंह के मार्गदर्शन में हमने सही तकनीक सीखी और धीरे–धीरे आत्मविश्वास के साथ राइफल चलाना सीखा।

शिविर की थ्योरी कक्षाएँ भी बहुत ज्ञानवर्धक थीं। पहली कक्षा सूबेदार सेइखोहौ वैफेई द्वारा .22 राइफल पर ली गई, जिसे बाद में सूबेदार रिंचिन खिमी ने आगे बढ़ाया। मुझे सबसे अधिक सूबेदार रिंचिन खिमी की कैमोफ्लाज और कंसीलमेंट विषय की कक्षा पसंद आई। इसके अलावा भारतीय सशस्त्र बलों, मानचित्र अध्ययन (मैप रीडिंग), दूरी का अनुमान (जजिंग डिस्टेंस), कम्पास एवं सर्विस प्रोटेक्टर, प्राथमिक उपचार (फर्स्ट एड), सैन्य संचार तथा खाद्य सुरक्षा जैसे विषयों पर भी प्रशिक्षण दिया गया। 7 जून को विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस के अवसर पर हमें स्वस्थ और अस्वस्थ भोजन की पहचान तथा सही खान–पान की आदतों के बारे में जानकारी दी गई। समय–समय पर कॉलेज के प्राचार्य श्री अमिताभ भारती तथा अन्य प्राध्यापकों ने भी हमें प्रेरित किया।

प्रशिक्षण के साथ–साथ हमने खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों में भी भाग लिया। रस्साकशी (टग ऑफ वॉर) प्रतियोगिता सबसे रोमांचक रही। दुर्भाग्यवश, हमारे कॉलेज से केवल सात कैडेट ही प्रतियोगिता में भाग ले सके, जबकि अन्य कॉलेजों के पास अधिक प्रतिभागी थे, जिससे वे खिलाड़ियों को बदल सकते थे। लगातार पीटी और अन्य शारीरिक गतिविधियों के कारण हमारे शरीर पहले से ही थके हुए थे, इसलिए हम प्रतियोगिता नहीं जीत सके। फिर भी हमने पूरी मेहनत की और इस अनुभव

से टीमवर्क, अच्छी तैयारी और पर्याप्त संख्या के महत्व को समझा।

शिविर के दौरान कुछ कठिनाइयाँ भी आईं। शुरुआती दिनों में पानी की कमी थी। सौभाग्य से हमारे कॉलेज की सभी कैडेटों ने पर्याप्त पानी पीया, इसलिए हम स्वस्थ रहीं, जबकि कई अन्य कैडेट पानी की कमी के कारण बीमार हो गईं। बाद में पानी की व्यवस्था बेहतर हो गई और सभी को राहत मिली।

इस शिविर का सबसे बड़ा सौभाग्य वरिष्ठ एनसीसी अधिकारियों से मिलने और उनसे सीखने का अवसर था। हमें कमांडर ब्रिगेडियर विवेक सिंह ठाकुर (सेना मेडल), कमांडिंग ऑफिसर लेफ्टिनेंट कर्नल पी. बी. शर्मा, सूबेदार मेजर बितुपन डेका तथा अन्य समर्पित पीआई स्टाफ, जेसीओ और जीसीओ से मिलने का अवसर मिला। उनका अनुशासन, कार्य के प्रति समर्पण और व्यक्तित्व हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा।

शिविर की सबसे अच्छी यादें मेरे लिए पीआई स्टाफ से जुड़ी हैं। वे बहुत सहयोगी, उत्साहवर्धक और हमेशा हमें नई बातें सिखाने के लिए तैयार रहते थे। उनके मार्गदर्शन से हर गतिविधि सीखने योग्य और आनंददायक बन गई।

इस शिविर ने मेरे व्यक्तित्व में सकारात्मक परिवर्तन लाया। इससे मेरा आत्मविश्वास बढ़ा, नेतृत्व क्षमता मजबूत हुई और अनुशासन का महत्व और गहराई से समझ में आया। मैंने यह भी सीखा कि

किसी भी एनसीसी शिविर में जाने से पहले थ्योरी और ड्रिल की अच्छी तैयारी करना बहुत आवश्यक है।

हालाँकि मुझे कोई आधिकारिक पद या विशेष पुरस्कार नहीं मिला, लेकिन मैं अपने साथ उससे भी अधिक मूल्यवान चीजें लेकर लौटी। ज्ञान, अविस्मरणीय यादें, नए मित्र और ऐसे अनुभव जो जीवन भर मेरे साथ रहेंगे।

बी. एन. जालान कॉलेज, सिसई में आयोजित यह एटीसी मेरे जीवन की एक अविस्मरणीय यात्रा रहेगी। यह केवल एक प्रशिक्षण शिविर नहीं था, बल्कि सीखने, स्वयं को बेहतर बनाने और जीवन के नए

अनुभव प्राप्त करने का एक अनमोल अवसर था, जिसे मैं हमेशा याद रखूँगी।

****

दहेज प्रथा

अंजली इंदवार
हिंदी विभाग (सेम–iii)
सत्र: 2023– 2027

दहेज प्रथा समाज की एक बड़ी और गंभीर समस्या है, जो मानव जीवन को प्रभावित करती है, क्योंकि दहेज एक ऐसी रूढ़िवादी प्रथा है जिसके कारण सामाजिक जीवन बिखर जाता है। एक पिता को दहेज तो देना पड़ता है साथ ही साथ उसे अपने पुत्री को भी घर से विदा करना पड़ता है। दहेज के लिए पिता को ऐसे अनेक कदम भी उठाने पड़ते हैं, जो वह कभी भी नहीं चाहता। मजबूर पिता अपने ही बेटी के विवाह के लिए कठिन परिश्रम करता। तब जाकर वह अपनी बेटी का विवाह करता है। इस दहेज प्रथा को समाप्त करने के लिए कई लोग सामने आए लेकिन आज भी इस रूढ़िवादी प्रथा से हमारा समाज जूझ ही रहा है।

दहेज प्रथा एक ऐसी प्रथा है, जिसमें विवाह के वक्त लड़की की तरफ से लड़के वालों को दहेज देना पड़ता है। दहेज एक ऐसी चीज है जो एक पिता को वह चीज करने के लिए मजबूर कर देता है,

जो वह नहीं करना चाहता। विवाह में लड़के वाले लड़की को शादी करके ले तो जाते हैं, साथ ही साथ मुंह मांगी रकम भी ले जाते हैं। इन कारणों से कभी–कभी एक पिता किस्तों में डूब जाता है और उनका पूरा जीवन किस्त चुकाने में ही चला जाता है। समाज इस रूढ़िवादी प्रथा में डूबा हुआ है।

दहेज प्रथा एक पुरानी प्रथा है जो प्राचीन काल से चल रही है। यह प्रथा समाज के लिए हानिकारक है क्योंकि यह मानव जीवन को तोड़ कर रख देता है। दहेज प्रथा से हर कोई बचना चाहता है दहेज कोई भी देना नहीं चाहता है, लेकिन दहेज लेना हर कोई चाहता है जिसकी वजह से आज समाज जूझ रहा है, यह मानव जीवन के लिए कलंक है।

दहेज प्रथा के कारण समाज में अनेक गंभीर समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। सबसे पहले इसका आर्थिक प्रभाव गरीब और मध्यम वर्गीय परिवारों पर पड़ता है। बेटी के विवाह के लिए माता–पिता को भारी धनराशि की व्यवस्था करनी पड़ती है। कई परिवार कर्ज लेकर या अपनी संपत्ति बेचकर दहेज जुटाते हैं, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो जाती है। कुछ परिवार दहेज के भय से अपनी बेटियों की शिक्षा और अन्य आवश्यकताओं पर पर्याप्त ध्यान नहीं दे पाते। इस प्रकार दहेज प्रथा परिवारों के आर्थिक विकास में बाधा बनती है।

दहेज प्रथा का सबसे दुखद प्रभाव महिलाओं पर पड़ता है। विवाह के बाद यदि दहेज की मांग पूरी नहीं होती, तो कई महिलाओं को मानसिक और शारीरिक उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है। उन्हें प्रताड़ित किया जाता है, अपमानित किया जाता है और कभी–कभी घर से निकाल दिया जाता है। अनेक मामलों में दहेज के लिए महिलाओं की हत्या तक कर दी जाती है। ऐसे अपराध न केवल मानवता के विरुद्ध हैं, बल्कि समाज की नैतिकता पर भी प्रश्नचिह्न लगाते हैं। दहेज प्रथा महिलाओं की गरिमा और सम्मान को ठेस पहुँचाती है तथा उनके अधिकारों का उल्लंघन करती है।

यह कुप्रथा कन्या भ्रूण हत्या और लिंग भेदभाव जैसी समस्याओं को भी जन्म देती है। कुछ लोग बेटी को आर्थिक बोझ समझते हैं क्योंकि भविष्य में उसके विवाह के लिए दहेज देना पड़ेगा। परिणाम स्वरूप लड़कियों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है। यह स्थिति समाज में स्त्री–पुरुष अनुपात को प्रभावित करती है और सामाजिक असंतुलन पैदा करती है। इसलिए दहेज प्रथा केवल एक पारिवारिक समस्या नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक समस्या है।

दहेज प्रथा को समाप्त करने के लिए सरकार ने अनेक कानूनी उपाय किए हैं। भारत में दहेज निषेध अधिनियम, 1961 के अंतर्गत दहेज लेना, देना और मांगना अपराध घोषित किया गया है। इसके अतिरिक्त महिलाओं को संरक्षण देने के लिए विभिन्न कानूनी प्रावधान बनाए गए हैं। हालांकि केवल कानून बनाना पर्याप्त नहीं है। जब तक समाज की मानसिकता नहीं बदलेगी, तब तक इस समस्या का पूर्ण समाधान संभव नहीं है।

दहेज प्रथा के उन्मूलन के लिए शिक्षा सबसे प्रभावी साधन है। शिक्षित समाज में जागरूकता बढ़ती है और लोग इस कुप्रथा के दुष्परिणामों को समझते हैं। युवाओं को स्वयं दहेज लेने और देने का विरोध करना चाहिए। विवाह को सरल और सादगीपूर्ण बनाना चाहिए तथा दिखावे की प्रवृत्ति से बचना चाहिए। सामाजिक संगठनों, विद्यालयों और महाविद्यालयों को भी जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को दहेज प्रथा के विरुद्ध प्रेरित करना चाहिए। महिलाओं को शिक्षा और रोजगार के अवसर प्रदान करके उन्हें आत्मनिर्भर बनाना भी आवश्यक है।

निष्कर्षतः दहेज प्रथा एक रूढ़िवादी प्रथा है, जो सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। आता है दहेज प्रथा को समाप्त करना ही उचित होगा, ताकि एक पिता को अपनी बेटी को देने के साथ अपनी पूरी उम्र भर की मेहनत भी गंवाना न पड़े।

****

कहानियाँ

रहस्यमयी जादुई डिब्बा

वर्षा कुमारी
राजनीति विज्ञान (एम. ए. सेम–iii)
सत्र: 2024–2026

गर्मी की छुट्टियाँ शुरू हो गई थीं और सभी बच्चे खुश थे। सभी अपने दादा–दादी के घर गाँव जाने की तैयारी कर रहे थे।

रवि भी बहुत उत्साहित था, क्योंकि वह अपनी छुट्टियाँ बिताने अपने गाँव रामपुर जाने वाला था। उसने अपने कपड़े, खिलौने और कुछ किताबें बैग में रख ली।

अगले दिन सुबह ग्यारह बजे उसकी बस थी, रवि बस में बैठ गया और खिड़की के पास वाली सीट पर बैठकर बाहर देखने लगा। वह सोच रहा था – "मैं गाँव जाकर बगीचे में आम खाऊंगा, जामुन खाऊंगा, बच्चों के साथ खेलूंगा और दादा–दादी से मजेदार कहानियाँ सुनूंगा। "

रास्ते में वह पेड़ – पक्षियों को देखता रहा और सोचने लगा कि यह पेड़ – पक्षी हमेशा चलते ही क्यों रहते हैं? यह सोचते – सोचते वह सो गया । करीब दो घंटे बाद बस रामपुर पहुँच गई। रवि जब दादा – दादी के घर पहुँचा, तो उसने प्यार से उन्हें गले लगा लिया। गाँव का खुला वातावरण, हरे – भरे पेड़ और साफ हवा देखकर रवि बहुत खुश हुआ।

अगले दिन रवि गाँव के बच्चों के साथ खेलने लगा। वह उनके साथ कबड्डी, क्रिकेट और छुपन – छुपाई खेलता। बगीचे में जाकर आम और जामुन खाता तथा पूरे दिन मस्ती करता। शाम को वह अपने दादाजी के पास बैठ जाता और उनसे मजेदार कहानियाँ सुनने लगा।

एक शाम जब सूरज ढल रहा था और आसमान नारंगी रंग में रंग गया था, रवि और उसके दोस्त गाँव के एक पुराने, सुनसान रास्ते से गुजर रहे थे। अचानक झाड़ियों के बीच से अजीब सी चमकती हुई रोशनी दिखाई दी।

"वह क्या है?" रवि ने धीमी आवाज में पूछा। सभी बच्चे धीरे–धीरे पास गए, वहाँ एक छोटा – सा लकड़ी का डिब्बा पड़ा था। जिससे नीली और सुनहरी रोशनी निकल रही थी।

हवा अचानक ठंडी हो गई ... पेड़ हिलने लगे... और कहीं दूर से आवाज सुनाई दी।

"ये...ये ठीक नहीं लग रहा चलो यहाँ से चलते हैं।" एक दोस्त डरते हुए बोला।

सभी बच्चे डर गए और पीछे हटने लगे, लेकिन रवि के दिल में डर के साथ–साथ जिज्ञासा भी थी।

"अगर यह कोई रहस्य है, तो इसे जानना चाहिए" उसने हिम्मत करके कहा।

दोस्तों ने मना किया, लेकिन रवि ने साहस दिखाया और उस डिब्बे को उठा लिया। उसने उस डिब्बे को चुपके से घर ले आया और एक कोने में छिपा लिया।

अगले दिन वह सामान्य रहा, दादा – दादी के साथ समय बिताया, खाना खाया, बातें की, लेकिन रात होते ही उसे डिब्बे की याद आई। धीरे से वह उस कोने में गया डिब्बा खोला अंदर से तेज चमक निकली जैसे कोई तारा चमक रहा हो। उसके अंदर सात बंद पत्र रखे हुए थे।

उसने पहला पत्र उठाया डिब्बे की रोशनी कम होने लगी। उसने पहला पत्र पढ़ा जिसमें लिखा था – "यदि तुम इस संसार को बचाना चाहते हो, यह संसार हरा – भरा रहे तो पेड़ लगाओ नहीं तो मैं इस दुनिया को रेगिस्तान बना दूंगा।" इतना पढ़ते ही अचानक हवा तेज चलने लगी और रवि को एक पल के लिए ऐसा लगा जैसे उसके सामने हरा – भरा गाँव सूखे रेगिस्तान में बदल गया हो।

वह डर गया। अगले दिन उसने अपने दोस्तों को बुलाया और कहने लगा – "हमें पेड़ लगाने होंगे। "सभी ने मिलकर पूरे गाँव में पौधे लगाए । धीरे–धीरे गाँव और भी सुंदर लगने लगा।

अगले दिन रवि ने दूसरे पत्र को खोला जिसमें लिखा था, "मदद का जादू। "किसी जरूरतमंद की मदद करो। रवि ने एक बुजुर्ग दादी को भारी सामान उठाने में मदद की। जैसे ही उसने मदद की, उसे महसूस हुआ जैसे डिब्बे की रोशनी और तेज हो गई हो।

जब उसने तीसरा पत्र पढ़ा तो उसमें लिखा था, "चोरी का परिणाम " चोरी इंसान को बुरा और कमजोर बना देती है, जो तुम्हारा नहीं है, उसे लेना गलत है... रवि ने यह पढ़ा लेकिन उसने इसे ज्यादा गंभीरता से नहीं लिया।

अगले ही दिन वह अपने दोस्तों के साथ बगीचे में गया। वहाँ आम और जामुन के पेड़ लदे हुए थे। सारे बच्चों ने मिलकर पेड़ों से आम तोड़े और खाने लगे। इतने सारे आम हैं, थोड़ा खा लेने से क्या फर्क पड़ेगा रवि ने हँसते हुए कहा। लेकिन कुछ ही दिनों में उन्होंने लगभग सारे पके आम तोड़ लिये।

एक दिन रवि वहाँ से गुजर रहा था तभी उसने देखा कि बगीचे का मालिक बहुत परेशान बैठा है। उसकी आँखों में चिंता साफ दिखाई दे रही थी । रवि ने छिपकर उसकी बातें सुनी। वह अपने परिवार से कह रहा था, " अब क्या करें? " यही आम बेचकर हमारा घर चलता था, लेकिन इस बार तो पेड़ों में एक भी आम नहीं है अब हम अपना गुजारा कैसे करेंगे?

यह सुनकर रवि के दिल को जोर का झटका लगा। उसे अपनी गलती का एहसास हुआ। उसे याद आया वह और उसके दोस्त ही रोज आकर आम तोड़ते थे। अगले दिन वह बगीचे के मालिक के पास गया और बोला, " चाचा जी हमसे गलती हो गई, हमें माफ कर दीजिए। " मलिक हैरान हुआ फिर बोला, बेटा गलती मान लेना ही सबसे बड़ी बात है, लेकिन याद रखना किसी का हक छिनना बहुत गलत होता है। रवि और उसके दोस्तों ने माफी मांगी और वादा किया कि वे आगे ऐसा कभी नहीं करेंगे। इसके बाद उन्होंने मिलकर बगीचे को साफ किया और नए पौधे लगाए।

अगले दिन वह चौथा पत्र पढ़ने लगा जिसमें लिखा था, "सत्य बोलो और सही मार्ग पर चलो" रवि ने ठान लिया कि वह हमेशा सच बोलेगा।

उसने पांचवा पत्र पढ़ा, "ज्ञान का प्रकाश" पढ़ाई सबसे बड़ा जादू है। अब रवि रोज पढ़ने लगा तोऔर दोस्तों को भी सिखाने लगा। धीरे – धीरे गाँव के बच्चे भी पढ़ाई में रुचि लेने लगे।

उसने छठा पत्र खोला, "सेवा का आनंद" । अपने से बड़ों की मदद करो। रवि ने अपनी दादी के साथ हाथ बंटाया, उसने खाना बनाना सीखा, चूल्हे की आँच, रोटी की खुशबू –उसे एक नया आनंद मिला।

उसने सातवां पत्र खोला जिसमें लिखा था, "जीवन का असली जादू " अंतिम पत्र खोलते ही चारों तरफ रोशनी फैल गई। तुमने सीख लिया है – असली जादू कोई डिब्बा नहीं बल्कि तुम्हारे अच्छे कर्म हैं। तुम्हारा जीवन खास है इसे सही रास्ते पर चला कर तुम दुनिया बदल सकते हो। अचानक डिब्बा चमका और गायब हो गया।

धीरे–धीरे छुट्टियाँ खत्म हो गई। जब रवि वापस शहर जा रहा था और बस में बैठा था वह सोच रहा था – क्या सच में वह डिब्बा जादुई था? या उसने मुझे सही रास्ता दिखाया। अब उसकी सोच बदल चुकी थी। उसने सोचा शायद वह डिब्बा कोई जादू नहीं था, बल्कि एक रास्ता था जो मुझे इंसान बना गया। उसके चेहरे पर मुस्कान थी और दिल में एक नया साहस।

सीख**:** असली जादू हमारे अच्छे कर्मों में होता है। हमें पेड़ पौधे लगाकर पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए। दूसरों की मदद करना हमें अच्छा इंसान बनाता है। चोरी करना गलत है और इससे दूसरों को नुकसान होता है। हमें हमेशा सच बोलना और सही रास्ते पर चलना चाहिए। पढ़ाई और मेहनत से ही हम अपने जीवन को सफल बना सकते हैं।

****

लाल शर्ट

रोहित प्रधान
हिंदी विभाग(बी. ए. सेम–iii)
सत्र: 2023–2027

आशीष और मनीषा दोनों एक दूसरे से बहुत प्यार करते थे और दोनों भाग कर शादी करते हैं क्योंकि उनके घर वाले अन्य जाति होने के कारण विवाह से खुश नहीं थे। वे दोनों चाहते थे कि वह अपने जीवन में खुशी–खुशी साथ मिलकर जीवन व्यतीत करें। वे अपने घर वालों से बचकर काफी दूर रहने के लिए चले गए।

कुछ दिनों बाद उनका एक बेटा होता है जिसका नाम वे अनुज रखते हैं। वे दोनों अपने बेटे की हर इच्छा को पूरी करने में कोई कमी नहीं रखते। जब उनका बेटा अनुज स्कूल जाने लगा तब उनके माता–पिता के द्वारा यह समझाया गया कि यदि तुम अच्छे अंकों से परीक्षा पास करते हो तो जो तुम्हारी इच्छा हो वह तुम्हें मिल जाएगी। उनका बेटा अनुज इन बातों को मन में बैठा कर पूरी मेहनत से पढ़ाई करने लगता है और अच्छे अंकों से पास हो जाता है। अनुज की मेहनत को देखते हुए उनके माता–पिता उससे पूछते हैं–

"बताओ, तुम्हें क्या चाहिए? "
अनुज बिना कुछ सोचे समझे कहता है,
"मुझे एक लाल शर्ट चाहिए।"
"बस तुम्हें लाल शर्ट चाहिए?"
"तुम चाहो तो और भी चीज मांग सकते हो।" परंतु अनुज ने सिर्फ लाल शर्ट की ही मांग की।

अनुज जब पांचवी क्लास में परीक्षा लिखने के लिए जा रहा था, तभी उसके माता–पिता ने उसे फिर कहा –यदि तुम इस परीक्षा में अच्छे अंकों से पास होते हो तो तुमको जो इच्छा हो तुम मांग सकते हो। कुछ दिन पश्चात रिजल्ट आता है फिर पता चलता है कि अनुज अपने क्लास में टॉप किया है। उनके माता–पिता रिजल्ट से बहुत खुश है और उससे पूछते हैं कि तुम्हें क्या चाहिए? अनुज का जवाब फिर आता है – लाल शर्ट।

उसके माता–पिता हैरान हो जाते हैं और उसे लाल शर्ट दिलाते हैं। हर बार अनुज को परीक्षा में पास होने पर जो इच्छा हो सब पूरी करने की बात कही जाती है। अनुज पांचवी क्लास से लेकर नवीं कक्षा तक परीक्षा में पास होने पर सिर्फ लाल शर्ट की ही मांग की।

जब अनुज 10वीं बोर्ड की परीक्षा लिखने के लिए घर से बाहर निकलता है तो उसके माता – पिता उसे सेंटर तक छोड़ने जाते हैं और उसे कहते हैं – ये तुम्हारे जीवन की सबसे महत्वपूर्ण परीक्षा है, अगर अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होते हो, तुम्हारी जो इच्छा हो मांग सकते हो। अनुज उस दिन अपने माता – पिता की बातों को गंभीर रूप से सोचने लगा और वह परीक्षा देने चला गया।

कुछ दिन बाद जब उसका रिजल्ट आता है। अनुज के माता –पिता को स्कूल से कॉल आता है कि अनुज पूरे जिले का टॉपर बन गया है। अनुज के माता – पिता बहुत खुश थे तथा उसकी हर इच्छा को पूरी करने को तैयार थे।

उसके माता – पिता अनुज के लेने उसके स्कूल जाते हैं तभी उनकी नजर अपने बेटे पर पड़ती है। वह भी अपने माता – पिता को देखकर सड़क पार करना चाहता था। तभी अनुज एक कार की चपेट में आ जाता है। उनके माता–पिता बहुत दुखी थे। वे रोते हुए अनुज से कहते हैं कि तुम्हारी कोई आखिरी इच्छा हो तो बताओ। अनुज एकदम धीमी आवाज में कहता है – " लाल शर्ट" और फिर अनुज की मृत्यु वहीं हो जाती है।

****

अक्टूबर के वे दिन

ब्यूटी बरवा
वाणिज्य विभाग (बी. कॉम, सेम–vii)
सत्र: 2022 – 2026

देविका हमेशा से भावनाओं के मामले में थोड़ी नादान थी, जिससे लोग अक्सर ' इमोशनल फूल ' कह कर पुकारते थे। वह लोगों पर बहुत जल्दी भरोसा कर लेती और फैसला दिल से लेती थी। लेकिन जहाँ कुत्ता का प्यार का सवाल था, देविका का साफ मानना था कि उसे किसी से प्यार नहीं करना है। वह इस झंझट से दूर ही रहना पसंद करती थी।

दूसरी तरफ ऋत्विक था–थोड़ा घमंडी, स्वार्थी और जिसे अपने लुक्स और अंदाज पर जरूरत से ज्यादा ईगो था। ऋत्विक के जीवन में पहले से ही एक लड़की थी, इसलिए उसकी दुनिया पूरी तरह सेट थी। दो अलग–अलग छोर पर खड़े ये दोनों लोग कभी नहीं मिलते, अगर उनके बीच एक कॉमन दोस्त न होता।

एक शाम, उसी कॉमन दोस्त के जरिए दोनों की पहली बार एक कॉन्फ्रेंस कॉल पर बात हुई। देविका बिना किसी लाग–लपेट के अपनी मासूमियत से बात कर रही थी और ऋत्विक अपने उसी ईगो वाले कड़क अंदाज में बातचीत में कुछ ऐसा था कि दोनों के बीच अनजाने में नंबर एक्सचेंज हो जाते हैं। नंबर मिलने के बाद शुरुआत में बस कभी – कभार ही बातें होती थीं। ऋत्विक अक्सर अपने घमंड में रहता और देविका अपनी सहज आदत के चलते उससे बात कर लेती। लेकिन धीरे–धीरे मैसेज और कॉल्स का यह सिलसिला जारी रहा। देविका को लगता था कि यह बस एक अच्छी दोस्ती है, इससे ज्यादा कुछ नहीं।

अक्टूबर की वो मुलाकात...

मीना की इस रोजमर्रा की बातचीत के बाद आखिरकार वो तारीख आई – 19 अक्टूबर।

उसे सुहानी शाम को दोनों पहली बार हमने सामने मिले। जब वे साथ बैठे , तो फोन वाली झिझक पूरी तरह गायब हो गई। उसे दिन दोनों के बीच बहुत अच्छी और लंबी बातें हुई। ऋत्विक का वो ईगो देविका की सादगी के आगे थोड़ा शांत लग रहा था। उस मुलाकात के बाद भी देविका को यही लगता था कि यह कोई प्यार नहीं है, बस एक गहरी बॉन्डिंग और अच्छी दोस्ती है। उसे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि ऋत्विक के दिमाग में क्या चल रहा है।

असल में ऋत्विक की इरादे कभी सच्चे थे ही नहीं। वह अंदर से पूरी तरह स्वार्थी था। उसकी अपनी जिंदगी और गर्लफ्रेंड तो थी ही, वह बस देविका की मासूमियत, उसका सीधेपन और उसकी भावनाओं का अपने ईगो को सेटिस्फाई करने के लिए इस्तेमाल कर रहा था। देविका उसके लिए सिर्फ एक जरिया थी।

और फिर, जब ऋत्विक का मन भर गया और उसे लगा कि अब उसका काम निकल चुका है, तो उसने एक झटके में देविका को अपनी जिंदगी से बाहर कर दिया। बिना किसी

मलाल या अफसोस के क्योंकि ऋत्विक के दिमाग में तो पहले से ही साफ था कि उसे एक दिन छोड़ना ही है।

जाने के बाद का एहसास...

ऋत्विक के इस तरह अचानक छोड़ देने से दैविका पूरी तरह टूट गई। उसे समझ नहीं आ रहा था कि कोई किसी की भावनाओं के साथ इतना बड़ा खिलवाड़ कैसे कर सकता है। लेकिन जैसे–जैसे दिन बीतते गए ऋत्विक का खालीपन उसके जिंदगी में बाहर आने लगा दैविका के दिल पर चढ़ा वहम का पर्दा हटने लगा।

जब ऋत्विक हमेशा के लिए दूर चला गया, तब उस सन्नाटे में दैविका को एक भारी एहसास हुआ, जिसे वह अब तक सिर्फ एक आम दोस्ती या आदत समझ रही थी, वह उससे कहीं आगे बढ़ चुका था। ऋत्विक के जाने के बाद दैविका को असली मायने में एहसास हुआ कि वह उसे कितना प्यार कर बैठी थी।

यह एहसास किसी सजा जैसा था। एक तरफ ऋत्विक का वह खौफनाक सच था कि उसने सिर्फ अपना मतलब निकाला और दूसरी तरफ दैविका का बेबस दिल था, जो सब कुछ लुट जाने के बाद जाग रहा था। 19 अक्टूबर की तारीख, जो कभी एक शुरुआत लगती थी, अब दैविका की जिंदगी का वह मोड बन चुकी थी जिसने उससे मोहब्बत का सबसे कड़वा और अधूरा सबक सिखा दिया।

यह कहानी इस हकीकत को बयां करती है की जिंदगी में हर मिलने वाला इंसान सच्चा नहीं होता, कुछ लोग सिर्फ सबक देने के लिए आते हैं। दैविका कि यह दास्तान हमें सिखाती है हमें सिखाती है कि किसी पर भी आंख बंद करके भरोसा करने से पहले आत्म सम्मान को सर्वोपरि रखना कितना जरूरी है।

****

कविताएं

इन हाथों को सलाम

(माँ–पापा के अथक परिश्रम को समर्पित)

नेहा रानी नायक
राजनीति विज्ञान विभाग (सेम ii)
सत्र: 2024– 2028

पापा के हाथ जब मशीन को छूते हैं,
टूटे हुए सुर भी तब जुड़ जाते हैं।
स्पीकर की तारें, बिखरे हुए पुर्जे
उनकी उँगलियों से सब सँवर जाते हैं।

हर यंत्र पहचाने उनका वो स्पर्श,
हर आवाज में उनका पसीना बोले।
जो दुनिया सुने संगीत बैठकर महफिल में,
उस सुर को मेरे पापा के हाथों ने खोले।

खुरदरी हथेली, तारों के निशान,
ये निशान किसी पुरस्कार से कम नहीं।
थकते नहीं, रुकते नहीं, झुकते नहीं
इनसा मेहनती इस दुनिया में कोई और नहीं।

माँ के हाथों को देखो जरा गौर से,
इन दरारों में एक दुनिया बसी है।
भारी कम्बल, कालीन, तम्बू के कपड़े
हर धुलाई में उनकी ममता कसी है।

सुबह उठकर चूल्हा जलाया माँ ने,
फिर साउंड सिस्टम का बोझ भी उठाया।
घर भी सँभाला, काम भी सँभाला
दो–दो जिम्मेदारियों को एक साथ निभाया।

बिना रुके, बिना थके,
हर बोझ को हँसकर उठाती रहीं।
चुपचाप जलती रहीं दीपक की तरह
अँधेरों में रोशनी लुटाती रहीं।

प्यार कभी होठों से नहीं कहा उन्होंने,
पर जिक्र आए तो आँखें भर आती हैं।
इस खामोश मोहब्बत को शब्द क्या दूँ
बिन बोले भी दिल तक पहुँच जाती हैं।

न कहते "थक गए", न कहते "बस करो",
बस चुपचाप हर मुश्किल से लड़ते हैं।
यही है इनका प्यार का तरीका —
बिना बोले भी सब कुछ कर देते हैं।

मैं देखती हूँ इन हाथों को रोज रोज,
और कुछ ठान लेती हूँ अपने मन में।
जो मेहनत अपने चुपके से की है सारी
वो रंग लाएगी मेरी हर उड़ान में।

दुनिया को नहीं पता इनकी असली कीमत
पर मैंने इन हाथों को जीते जी पहचाना।

माँ के हाथों को—सलाम।
पापा के हाथों को—सलाम।
इस लगन को, इस त्याग को
मेरा सलाम, मेरा सलाम, मेरा सलाम।

अपकी हर थकान, हर त्याग, हर बलिदान,
मेरी हर कामयाबी में जिंदा रहेगी।
माँ–पापा, अपकी ये मेहनती हाथ
मेरी यह पहचान बनकर दुनिया में चमकेगी।

झुकता है मेरा सिर इन हाथों के आगे,
जिन्होंने खुद को मिटाकर हमें बनाया।

****

मेहनतकश हाथों को सलाम

हिलारुस लकड़ा
हिंदी विभाग (बी. ए. सेम– ii)
सत्र : 2024 – 2028

सब हाथों का तो खेल है,
हाथों का हो चमत्कार।
हाथों का हो करामत,
आज उन हाथों को सलाम।

जो मेहनतकश हाथों से किया चमत्कार,
आज उन हाथों को सलाम ।
जो अपने हाथों से ही नहीं,
अपने कर्मों से देश के लिए किया कमाल।

एक और माता–पिता अपने हाथों से,
है एक इंसान को बनाया।
दूसरी और संविधान के पिता ,
भीमराव अंबेडकर ने संविधान को लिखा।

सब हाथों का ही तो खेल है,
हाथों का ही चमत्कार।
हाथों का ही करामत,
मेहनतकश हाथों को सलाम।
मेहनतकश हाथों को सलाम

****

मेहनतकश हाथों को सलाम

जेन रोजलिन बारला
अर्थशास्त्र विभाग (बी. ए .सेम–vii)
सत्र: 2022–26

मेहनतकश हाथों को सलाम
जो सूरज से पहले जागे हैं,
पसीने की स्याही से जिसने
किस्मत के पन्ने बांधे हैं।

जलती धूप में, कड़कती ठंड में
वो न झुकता किसी मुश्किल में।
जो पसीने से सपने सजाते,
धूप में जलकर भी मुस्कुराते,

उन मेहनतकश हाथों को सलाम।
मिट्टी से सोना उगाते,
मेहनत से जग में हरियाली लाते।
इमारतें , सड़कें, पुल ,कारखाने
सब उनकी गवाही देते।
कल का सूरज, आज
अपनी मेहनत से लाते
उन मेहनतकश हाथों को सलाम।

ना महलों की चाह रखते।
ना चमकते ताज की बात करते ।
ना ही कोई ऊँची शान,
फिर भी सबसे ऊँचा उनका मान।

यह हाथ नहीं तस्वीरों में सजते,
ना ही ये अखबारों में छपते।
फिर भी इन हाथों की शक्ति से,
हर दिन नया इतिहास रचते।
उन मेहनतकश हाथों को सलाम।

****

मेहनतकश हाथों को सलाम

वर्षा कुमारी
राजनीति विज्ञान विभाग
एम. ए. सेम iii
सत्र:2024–2026

मेहनतकश हाथों में सलाम,
इन हाथों में सजे सपनों के आलम।
इनमें बसते अनगिनत अरमान,
नई ऊंचाइयों को छूने का अरमान।

कर्मठ हाथों में मिट्टी को सोना बना दिया,
इन हाथों ने मिट्टी में जीवन खिला दिया।
हर मेहनत के पीछे छुपा है –एक अरमान,
हर मुश्किलों को हराने का अरमान,
मेहनतकश हाथों को सलाम।

धूप में जलते, बारिश में भींगते,
फिर भी हँस कर अपने सपनों के लिए जीते।
हर मेहनत के पीछे छुपा है– एक अरमान,
अपने सपनों को सच करने का अरमान,
मेहनतकश हाथों को सलाम।

****

झारखंड के प्रमुख जलप्रपातों के नाम –

जलप्रपातों के नाम

1. लोध जलप्रपात (बूढ़ा घाघ) –लातेहार जिला
2. हुंडरु जलप्रपात – रांची
3. दशम जलप्रपात –रांची
4. जोन्हा जलप्रपात गौतम धारा) – रांची
5. पंचघाघ – खूंटी
6. रजरप्पा – रामगढ़
7. हिरनी जलप्रपात – पश्चिम सिंहभूम
8. सीता जलप्रपात – रांची
9. सोनुआ जलप्रपात – रांची
10. जीकरा जलप्रपात – रांची
11. चंद्रा जलप्रपात – रांची
12. घोड़घड़ा जलप्रपात – रांची
13. पेरवाघाघ जलप्रपात – खूंटी
14. पगुरा जलप्रपात – खूंटी
15. रिमिक्स जलप्रपात – खूंटी
16. रानी जलप्रपात – खूंटी
17. धारागिरी जलप्रपात – पूर्वी सिंहभूम
18. जेरीट जलप्रपात – पूर्वी सिंहभूम
19. वुरुडीह जलप्रपात– पूर्वी सिंहभूम
20. धकोरा जलप्रपात – पश्चिमी सिंहभूम
21. हेसा– कोचा जलप्रपात – सरायकेला खरसांवा
22. दुरदुरी जलप्रपात – सरायकेला
23. कुण्ड जलप्रपात – पलामू
24. सतबहनी जलप्रपात – गढ़वा
25. सुखलदरी जलप्रपात – गढ़वा
26. गौतमघाघ जलप्रपात – लातेहार
27. पलानी जलप्रपात – रामगढ़
28. फूलवार कोचा जलप्रपात – रामगढ़
29. नागफेनी जलप्रपात – गुमला
30. बाघमुंडा जलप्रपात – गुमला
31. प्रेमा घाघ – गुमला
32. घड़घड़िया जलप्रपात – लोहरदगा
33. डुमेर– सुमेर जलप्रपात – चतरा
34. गोवा जलप्रपात – चतरा
35. केरीदाह जलप्रपात – चतरा
36. राजाडेरा जलप्रपात – सिमडेगा
37. सुगाकाय जलप्रपात – सिमडेगा
38. मुचरी नाला जलप्रपात – बोकारो

हिंदी महीनों के नाम–:

1. चैत्र – (मार्च – अप्रैल)
2. वैशाख – (अप्रैल – मई)
3. ज्येष्ठ/जेठ – (मई – जून)
4. आषाढ़ – (जून – जुलाई)
5. श्रावण/ सावन – (जुलाई – अगस्त)
6. भादो/ भाद्रपद – (अगस्त – सितंबर)
7. आश्विन/ क्वार – (सितंबर – अक्टूबर)
8. कार्तिक – (अक्टूबर – नवंबर)
9. मार्गशीर्ष/अगहन – (नवंबर – दिसंबर)
10. पौष/पूस – (दिसंबर – जनवरी)
11. माघ – (जनवरी – फरवरी)
12. फाल्गुन – (फरवरी – मार्च)

करंट अफेयर्स (समसामयिक घटनाएं) –:

1. अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार 2026 से किस उपन्यास को सम्मानित किया गया?
   उत्तर: ताइवानी उपन्यास – 'ताइवान ट्रेवलॉग'
   लेखक : यांग शांगजी
   अनुवादक – लिन किंग
2. दिनों गुरु (शिबू सोरेन) को मरणोपरांत कौन सा सम्मान प्राप्त हुआ?
   उत्तर: पद्म भूषण (भारत के तीसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान)
3. भारत का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार कौन सा है?
   उत्तर: भारत रत्न
4. हिंदी भाषा के लिए वर्ष 2026 का साहित्य अकादमी पुरस्कार किसे मिला?
   उत्तर : ममता कालिया – संस्मरण – 'जीते जी इलाहाबाद'
5. फीफा का फुल फॉर्म क्या है?
   उत्तर : 'International federation of football association'
   'अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल महासंघ '
6. अंग्रेजी भाषा के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार किसे मिला?
   उत्तर : नवतेज सरना (पूर्व राजनयिक)
   उपन्यास : 'क्रिमसन स्प्रिंग'
7. वर्ष 2026 के लिए राष्ट्रपति ने कुल कितने पद्म पुरस्कारों को मंजूरी दी है?
   उत्तर : कुल पुरस्कार – 131
   पद्म विभूषण – 05
   पद्म भूषण – 13
   पद्म श्री – 113
8. केरल राज्य का नया नाम क्या है?
   उत्तर : केरलम।
9. जून 2026 में फीफा विश्व कप का 23वां संस्करण किस देश की मेजबानी में शुरू हुआ?
   उत्तर : कनाडा
   मैक्सिको
   यू. एस. ए.
   तीनों संयुक्त रूप से मेजबानी कर रहे हैं।
10. भारत के नए चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ
   (CDS) कौन बने?
   उत्तर : एन. एस. राजा सुब्रमणि।
11. मई 2026 में केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने नौसेना शौर्य वाटिका नामक एक खुले नौसेना संग्रहालय का उद्घाटन कहां किया?
   उत्तर : लखनऊ।
12. परमाणु ऊर्जा का उपयोग करके बिजली पैदा करने वाला दुनिया का 33 वां देश कौन बन गया?
   उतर: बांग्लादेश।
13. महिलाओं की सुरक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए किस राज्य ने स्त्री राइड नामक पहल की शुरुआत की?
   उत्तर : तेलंगाना।

14-मई 2026 में भारत के 100वें N-Gen (न्यू जनरेशन) का उद्घाटन कहां किया गया?

उत्तर : पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय शिलांग में।

15. यूनेस्को ने किस राज्य के कुंभलगढ़ किले को दुनिया की दूसरी सबसे लंबी जीवित दीवार के रूप में मान्यता प्रदान की है?

    उत्तर : राजस्थान।

16. यू पी आई का फुल फॉर्म क्या है?

    उत्तर : एकीकृत भुगतान इंटरफेस।

17. झारखंड की राजकीय मछली कौन सी है?

    उत्तर : देसी मांगुर।

18. संथाली भाषा की ओलचिकी लिपि की शताब्दी समारोह कहां मनाई गई?

    उत्तर : जमशेदपुर के काराडीह स्थित दिशोम जाहिरथान में।

****

मजेदार पहेलियाँ

1. ऐसी कौन–सी चीज है जो पानी पीते ही मर जाती है?
   उत्तर : आग
2. वह क्या है जो आपके पास जितना ज्यादा होगा, उतना ही कम दिखाई देगा?
   उत्तर : अंधेरा
3. ऐसी कौन–सी चीज है जो चलती भी है और रुकती भी है, लेकिन उसके पैर नहीं होते?
   उत्तर : घड़ी
4. ऐसी कौन–सी चीज है जो खुद तो चलती नहीं, लेकिन सबको चलाती है?
   उत्तर : सड़क
5. वह क्या है जो सिर पर चढ़ता है, लेकिन बाल नहीं है?
   उत्तर : बुखार

****

संत जेवियर्स कॉलेज, धवईपानी, सिमडेगा
पता – धवईपानी, डाकघर – खिजरी, थाना – ठेठइटांगर
पिन – 835235, जिला – सिमडेगा (झारखण्ड)
ईमेल – sxcsimdega2016@gmail.com